फर फर फर
उड़ी पतंग

चकमक में प्रकाशित कविताओं का संकलन

एकलव्य का प्रकाशन

फर फर फर उड़ी पतंग

PHAR PHAR PHAR UDI PATANG

चकमक में प्रकाशित कविताओं का संकलन

आवरण चित्रः पूर्वा वशिष्ठ, भोपाल (म.प्र.)

इस पुस्तिका में संकलित कविताएँ चकमक के विभिन्न अंकों से ली गई हैं। कविताओं तथा चित्रों के पुनःप्रकाशन के लिए लेखकों तथा चित्रकारों के सौजन्य के हम आभारी हैं।

प्रथम संस्करणः फरवरी 1997
प्रथम पुनर्मुद्रणः मार्च 1999/10000 प्रतियाँ
द्वितीय पुनर्मुद्रणः सितम्बर 2003/10000 प्रतियाँ
तृतीय पुनर्मुद्रणः सितम्बर 2008/5000 प्रतियाँ
80 gsm मेपलिथो पर प्रकाशित
मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार एवं
सर रतन टाटा ट्रस्ट के वित्तीय सहयोग से विकसित।

ISBN: 81-87171-19-7
मूल्यः 5.00 रुपए

प्रकाशकः **एकलव्य**
ई-10 बी डी ए कॉलोनी, शंकर नगर,
शिवाजी नगर, भोपाल - 462 016 (म.प्र.)
फोनः 0755-255 0976, 267 1017, 255 1109
फैक्सः 0755-255 1108
www.eklavya.in
सम्पादकीयः books@eklavya.in
किताबें मँगवाने के लिएः pitara@eklavya.in

मुद्रकः श्रेया ऑफसेट प्रिंटर्स, भोपाल, फोन (0755) 427 5001

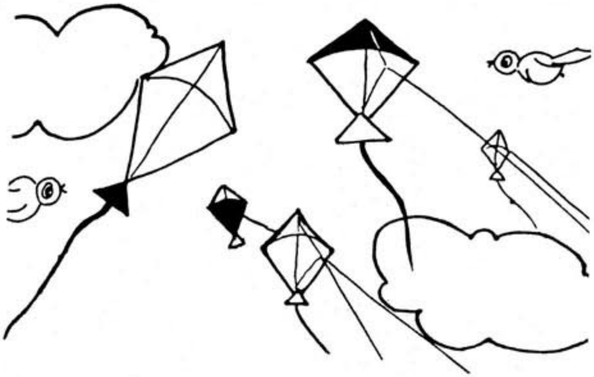

फर फर फर उड़ी पतंग

फर फर फर फर उड़ी पतंग
वो देखो वो आसमान तक
सर सर सर सर चढ़ी पतंग

चिड़ियों के संग चिड़ियों जैसी
फुर फुर फुर उड़ रही पतंग

आसमान की सैर को निकली
ऊँची ऊँची चढ़ी पतंग

बादल से पहचान है उसकी
उससे मिलने चली पतंग

हवा की गाड़ी पे चढ़ भागी
डोर लगाम से थमते अंग

ढील अभी दे देना उसको
खींचा तो कट गई पतंग

इधर-उधर उड़ मदमाती-सी
कहाँ न जाने गिरी पतंग

❑ सुधा चौहान
चित्र : जया विवेक
(जुलाई, 1989)

रंगों का गीत

लाल रंग लाला पर डालो
हरा रंग हलवाई पर,
पीले से पप्पू को पोतो
नीला नीलम भाई पर।

नारंगी से रंगम् जी को
रंगो आज सब जी भरकर,
गोकुल का मुख करो गुलाबी
भाग न पाए इधर-उधर।

मलो बैंगनी बिरजू के सिर
काला कल्लू पर छोड़ो,
रंग सुनहरा सोनू जी पर
जल्दी पिचकारी मोड़ो।

देखो कोई बचे न कोरा
वर्ष बाद आई होली,
बुरा न मानो कोई इनका
ये है बच्चों की टोली।

❑ **बाबूलाल शर्मा 'प्रेम'**
चित्र : धनंजय खिरवड़कर
(मार्च, 1995)

लड़ना है महँगाई से

लड़ना है महँगाई से
महँगी हुई पढ़ाई से।

महँगी कॉपी-कलम-किताब,
कैसे हम हल करें हिसाब,
क़ीमत आसमान यूँ छूती
हो जाता है मूड ख़राब।

टीचर सदा कड़ाई से
माँगें फ़ीस रूखाई से।

माँ-पापा कितना खटते हैं,
रुपए फिर भी ना अटते हैं,
बढ़ती फ़रमाइशें हमारी
थकते नहीं, माँग रटते हैं।

क्या पूछें परछाई से
बढ़ती बड़ी ढिठाई से।

यदि ज़रूरतें हम कम कर दें,
घरवालों में हिम्मत भर दें,
क्या ख़रीदना बहुत ज़रूरी?
ख़ुद सवाल कर ख़ुद उत्तर दें।

जुड़-जुड़ पाई-पाई से
बनते पर्वत राई से।

❑ **भगवती प्रसाद द्विवेदी**

(जून, 1993)

हमसे सब कहते

नहीं सूर्य से कहता कोई
धूप यहाँ पर मत फैलाओ
कोई नहीं चाँद से कहता
उठा चाँदनी को ले जाओ।

कोई नहीं हवा से कहता
ख़बरदार जो अन्दर आई
बादल से कहता कब कोई
क्यों जलधार यहाँ बरसाई?

फिर क्यों हमसे भैया कहते
यहाँ न आओ, भागो जाओ।
अम्मा कहती हैं - 'घर भर में
खेल खिलौने मत फैलाओ।'

पापा कहते - 'बाहर खेलो,
ख़बरदार जो अन्दर आए।'
हम पर ही सबका बस चलता
जो चाहे वह डाँट बताए।

❑ **निरंकार देव सेवक**

(दिसम्बर, 1990)

जजमान

मेरे दाऊ
गोल मटोल
तोंद दिख रही-
जैसे ढोल।

सर को घुटा
हाथ ले डंडा
मथुरा के
बन जाते पंडा।

चोटी उनकी
करे कमाल,
चलते दाऊ
तोंद निकाल।

दाऊ-खाऊ
बन जजमान
खा जाते
मन भर पकवान!

❑ **चक्रधर शुक्ल**

चित्र : आशीष श्रीवास्तव

(अक्टूबर 1989)

मन करता है

मन करता है सूरज बनकर
आसमान में दौड़ लगाऊँ

मन करता है चन्दा बनकर
सब तारों पर अकड़ दिखाऊँ

मन करता है बाबा बनकर
घर में सब पर धौंस जमाऊँ

मन करता है पापा बनकर
मैं भी अपनी मूँछ बढ़ाऊँ

मन करता है तितली बनकर
दूर-दूर उड़ता जाऊँ

मन करता है कोयल बनकर
मीठे-मीठे बोल सुनाऊँ

मन करता है चिड़िया बनकर
चीं चीं चूँ-चूँ शोर मचाऊँ

मन करता है चर्खी लेकर
पीली-लाल पतंग उड़ाऊँ।

❑ **सुरेन्द्र विक्रम**

(मार्च, 1994)

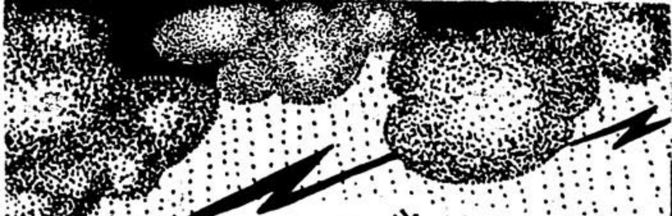

बादल हैं या

तड़-तड़ तड़-तड़
बड़म-बड़म,
बादल हैं या एटमबम।

साथ हवा के दौड़ रहे
काली-चादर ओढ़ रहे
आसमान के फव्वारे
गर्मी में लगते प्यारे

बूँदें गिरतीं
छम-छम-छम।

हम बच्चे शैतानी से
भीग रहे थे पानी से
सब आँगन में घूम-घूम
थिरक-थिरककर झूम-झूम

कड़की बिजली -
डर गये हम।
बादल हैं या एटमबम।

❑ अशोक अंजुम
चित्र : जया विवेक
(सितम्बर, 1995)

आम

मुझे बहुत भाते हैं नानी
मीठे-मीठे आम,
भर डलिया तू मुझे खिला दे
लूँगा तेरा नाम।

बहुत बड़ी है बगिया तेरी
छोटा मेरा पेट,
और पेट से भी छोटा है
मेरे मुँह का गेट!

घबरा मत ना खा पाऊँ मैं
बगिया भर के आम,
न दे टॉफ़ी न दे बिस्किट
दे बस केवल आम!

आम खिलाकर करवा ले
तू मुझसे सारे काम,
सिर्फ़ एक दिन को कर दे
बस बगिया मेरे नाम!

❑ **शिवचरण चौहान**

(मई, 1994)

चींटी-जूँ

कुक्कड़ कूँ भई कुक्कड़ कूँ
एक थी चींटी
एक थी जूँ
चींटी बोली
जूँ री जूँ
मैं तो जाती
टिम्बक टूँ!
बोली जूँ
क्यों री क्यों??
हो गई उन में
धूँआऽ धूँ ऽऽ

आसमान तक
खाक उड़ी
चींटी जी की
नाक चढ़ी
आऽ आ ऽऽ
आ ऽऽ क छूँ ऽऽ ..
उड़ गई जूँ
टिम्बक टूँ
रह गई चींटी
ज्यों की त्यों
कुक्कड़ कूँ भई कुक्कड़ कूँ

❑ स्मिता अग्रवाल
चित्र : जया विवेक
(सितम्बर, 1992)

ढेंचू! ढेंचू!!

ढेंचू! ढेंचू! ढेंचू!
मैं ज़ोर ज़ोर से रेंकू!!
ढेंचू! ढेंचू! ढेंचू!
शहर गया है धोबी
लाने आलू-गोभी
सब कुछ मैं खा लूँगा
आज मिलेगा जो भी
खेत मेड़ में जा के
मैं ख़ूब दुलत्ती फेंकू!
ढेंचू! ढेंचू! ढेंचू!
आज पीठ है ख़ाली
मैं फूलों की डाली
जी भर के लोटूँगा
बन्द हुई रखवाली
जी करता दुनिया को
मैं टके सेर में बेंचू
ढेंचू! ढेंचू! ढेंचू!
सपनों में खो जाऊँ
मैं धोबी बन जाऊँ
फिर अपने धोबी को
भूरा गधा बनाऊँ
उस पर कपड़े लाद
मैं कान पकड़कर खेंचू!
ढेंचू! ढेंचू! ढेंचू!

❑ **हरीश निगम**
चित्र : सुशील लांडगे
(मई, 1993)

पृथ्वी एक किताब

जीवन के आने जाने का
दुनिया के बन जाने का
इसमें लिखा सभी हिसाब
पृथ्वी कितनी बड़ी किताब।

खोल-खोलकर बाँचा इसको
देखा परखा जाँचा इसको,
निकला है अनमोल खज़ाना,
मानव का इतिहास पुराना।

पृथ्वी की गहराई में
जो जो मिला खुदाई में
इन चीज़ों से जाना हमने
दुनिया को पहचाना हमने।

थोड़ा तुम भी पढ़ो जनाब,
पृथ्वी बहुत बड़ी किताब।

❑ अनवारे इस्लाम
चित्र : सुधा मेहता
(जनवरी 1994)

चिड़िया

चीं-चीं-चीं-चीं गाती चिड़िया।
इस डाली से उस डाली पर
बैठा करती है उड़-उड़कर।
सबको ख़ूब सुहाती चिड़िया!

आँगन-आँगन चुगती दाने
नल पर आती बैठ नहाने।
पंख भिगो सुख पाती चिड़िया!

कभी हमारे पास आ जाती
रह-रहकर आँखें मटकाती।
कहकर कुछ उड़ जाती चिड़िया!

कभी परस्पर है लड़ जाती
फिर खुश होकर चोंच मिलाती।
ढेरों प्यार लुटाती चिड़िया!

भाता इस न बँधकर रहना
जाना हरदम खुलकर उड़ना!
मुक्ति मंत्र सिखलाती चिड़िया!

❑ राजनारायण चौधरी
चित्र : प्रवीण नगरकर
(अप्रैल, 1992)

मोर

रोज़ सबेरे एक सलोना
मोर हमारी छत पर आता।

पिऊ-पिऊ है रटता रहता,
क्या जाने वह क्या है कहता।
स्वर में मिसरी घुली हुई है,
सूरत उसकी छुई-मुई है।

सब के मन को ख़ूब लुभाता,
मोर हमारी छत पर आता।

इधर फुदकता, उधर चहकता,
बड़ा निगोड़ा-कभी न थकता।
छोटी-छोटी आँखें उसकी,
रंग-बिरंगी पाँखें उसकी।

ठुमक-ठुमककर नाच दिखाता,
मोर हमारी छत पर आता।

❑ शंभुनाथ पाड़िया 'पुष्कर'
(दिसम्बर 1990)

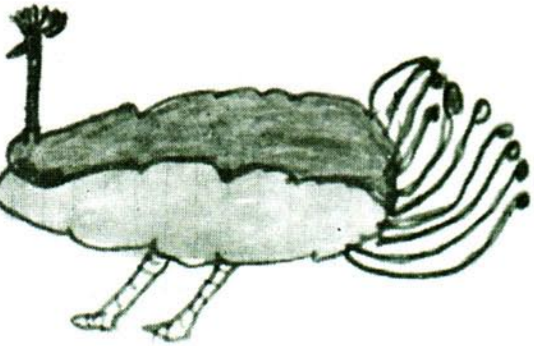

साक्षी मिश्रा, छह वर्ष, डिंडोरी, मण्डला, म.प्र.

हाय मरे

बन्दर भागा, भालू भागा
हाथी भागा लदरबदर
भागा स्यार, भेड़िया भागा
भागी साही अपने घर
जाने क्या कह दिया शेर ने
भाग चले सब डरे डरे
भाग चला खरगोश ज़ोर से
कहता ऐसे - हाय मरे।

❑ डॉ. श्रीप्रसाद
(जुलाई, 1992)

मूल्यः 5.00 रुपए